# कैराना की बिसात पर भाजपा-संघ की तैयारी

## सच क्या है, कैराना से हिंदू ही नहीं मुसलमान भी भाग रहे हैं

**-वाई. के. रज्जन**

भारतीय जनता पार्टी अपनी मिशन यूपी कैराना की बिसात पर पूरा करना चाहती है। उसके लिए उन्हें हुकुम सिंह जैसा एक महत्वाकांक्षी नेता मिल गया है तो यूपी का सीएम बनने के लिए कैराना की जमीन को हिंदू-मुसलमान में बांट कर खून की होली खेलना चाहता है। साथ ही हुकुम सिंह अपनी बेटी को यहां से विधायक बनवाना चाहता है। कैराना की आग को पूरे यूपी में फैलाने की सुनियोजित साजिश में संघ परिवार जुट गया है। इस बार अमित शाह से लेकर तमाम भाजपाई अपनी मंशा छिपाने से बाज नहीं आ रहे हैं। वो साफ कह रहे हैं कि कैराना हमारी इज्जत का सवाल बन गया है। मुलायम सिंह यादव खानदान को मालूम है कि 2017 के विधानसभा चुनाव में उसकी वापसी नहीं होने जा रही है तो मुलायम खानदान ने भाजपा की आसानी के लिए सारा रायता फैलवाने में मदद की है, ताकि बहुजन समाज पार्टी की सीएम प्रत्याशी मायावती की ताजपोशी रोकी जा सके।

### क्या है कैराना की हकीकत

कैराना से कुल 1254 परिवार बीस साल मे पलायन कर गए जिनमे से सांसद हुकम सिंह के अनुसार 341 हिन्दू परिवार है। बाकी 913 परिवार मुसलमान है । इनमे सबसे बड़ा नाम सुप्रीम कोर्ट के मशहूर अधिवक्ता सय्यद नादिर अली खान का है जिनकी कैराना मे करोड़ो की संपत्ति आज भी आदमी के लिए तरस रही है । नादिर अली खान तरक्की पसंद रहे। दिल्ली को दिल दे दिया मगर उनके बच्चे जिनमे सबसे बड़े बेटे सय्यद रजा अली खान हर साल मुहर्रम मे तबियत के लिए आते है ।

कैराना में लोकल हिंदू लोग ही आपको ऐसे सैकड़ो दरवाजें दिखा देंगे जहां से मुस्लिम परिवार पलायन कर गए । दरअसल छोटे कस्बे की यही कहानी है। वहां से अच्छी जिंदगी की तलाश मे अक्सर लोग विकल्प तलाश लेते है । नए आंकड़ो के मुताबिक मुसलमानो की आबादी कस्बो मे रहना पसंद करती है । मुजफ्फरनगर के 14 मे से 12 कस्बो मे शामली के सभी कस्बो मे सहारनपुर के 12 मे से 10 कस्बो मे मेरठ के 8 कस्बो मे और बिजनौर के सभी कस्बो मे मुसलमानो की आबादी सबसे ज्यादा है।

बिजनौर मे तो 18 मे से 17 नगर पंचायत अध्यक्ष मुसलमान है । इसके उलट सभी शहरों मे मुसलमानो की आबादी हिन्दुओ से कम है और एक भी महापौर मुसलमान नही है । शहरों मे गरीब तबके का मुसलमान है जो रोजगार की तलाश मे शहरी हो गया । गांव से भी मुसलमानो ने बड़ी संख्या मे पलायन किया । जमीन इनके पास थी नही । शहर मे जाने की हिम्मत नही थी। कस्बे को चुन लिया गया । सांसद हुकुम सिंह एक आंकड़ा ऐसा भी दें कि कितने बाहर गांव के लोग कैराना आकर बस गए है। यकीनन यह संख्या उनकी 341 से ज्यादा होगी।

### सिर्फ अपनी बिरादरी का ख्याल

एक यह तथ्य भी रोचक होगा कि हिन्दू लोग जो कैराना से चले गए, वे किस जाति के हैं या फिर इनमे से कितने गुर्जर हैं। अगर यह संख्या कम है तो इसका यह मतलब हुआ की सांसद हुकम सिंह ने सिर्फ अपनी ही बिरादरी के लोगों की बात रखी । अगर यह संख्या अनुपातिक रूप से ज्यादा है तो सांसद हुकुम सिंह बताएं कि इतने बड़े नेता होने के बावजूद वो अपनी बिरादरी की भी रक्षा क्यों नही कर सके ! तो यह समझा जाए कि सांसद साहब नाकामयाब नेता हैं जो जनता की उम्मीदों पर खरे नही उतरे । इस दौरान वो कई बार विधायक रहे । कैबिनेट मंत्री रहे। उपमुख्यमंत्री रहे। सरकार के सिरमौर रहे। उन्होंने लाल, काला, हरा और नीले पेन का चलन चलाया..सिर्फ अफसर जानते थे की किस कलर की नोटिंग पर काम करना है।

### बालियान की भी टीस है

इलाहाबाद से पड़े काबिल और संस्कारित हुकुम सिंह के मन मष्तिस्क पर भी जब वायरस असर करता है तो दंगा निकलता है। मुजफ्फरनगर दंगे मे वो आरोपी थे । बुच्चखेडी से लेकर कलंदरशाह तक उन्होंने बहुत मेहनत की। इधर उधर की बात की। सरेआम डंडे से पिटे। पुलिस ने उन्हें बैठने के लिये कुर्सी नही दी । 75 साल के अकेले बुजुर्ग जो खुद कैराना से पलायन कर आए..., ने क्या-क्या नही झेला। मगर केंद्र में मंत्री बन गए नए नेवेले संजीव बालियान। टीस दिल मे लगी अब सीएम बनने की ख्वाहिश है। इस नेता के इरादे खतरनाक हैं। यह शख्स यूपी का सीएम बनना चाहता है। भले ही उसके लिए खूनी होली क्यों न खेलनी पड़े। क्योंकि जब तक ये हिंदू-मुसलमान का राग नहीं अलापेगा, तब तक संघ इसका नाम सीएम के लिए बीजेपी के सामने पेश नहीं करेगा। वैसे हुकुम सिंह ऐसे भाजपा नेता है जिन्हें कम से कम 5000 मुसलमान जरूर वोट करते है उनकी वफादारी की शर्म भी इसे नहीं आ रही है। क्या कहती है डीआईजी की रिपोर्ट आने वाले विधानसभा चुनावों में अपने लाभ के लिए भाजपा हिंदुओं में कथित असुरक्षा की भावना को मुद्दा बनाकर हिंदू मतों का ध्रुवीकरण करना चाहती है। सांसद हुकुम सिंह ने वर्ष 2013 में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण कर जीत हासिल की थी। अब वो अपनी बेटी को चुनाव लड़वाना चाहते हैं। जिसके लिए सांप्रदायिक ध्रुवीकरण कर रहे हैं। कैराना प्रकरण को लेकर ये आरोप भाजपा की किसी विपक्षी पार्टी के नेता के नहीं बल्कि सहारनपुर रेंज के डीआईजी एके राघव की डीजीपी मुख्यालय को भेजी गई रिपोर्ट के अंश हैं।

### बड़ी सांप्रदायिक घटना की तैयारी

डीआईजी सहारनपुर रेंज ए.के. राघव ने 11 जून को भेजी रिपोर्ट में लिखा है कि शामली के कस्बा कांधला, कैराना, शामली, झिंझाना, आसपास के गांव व कैराना के मोहल्ला आलकला, कायस्थवाड़ा, गुम्बद, लालकुआं, बेगमपुरा, दरबारखुर्द, आर्यपुरी, कांधला अड्डा पानीपत रोड में हिंदू-मुस्लिम मिश्रित आबादी है। कस्बा कैराना की करीब 95000 की आबादी में करीब 85 प्रतिशत मुस्लिम और 15 प्रतिशत हिंदू हैं। भाजपा व हिंदू संगठनों द्वारा स्वार्थवश आने वाले विधानसभा चुनावों में लाभ लेने के उद्देश्य से हिंदुओं में कथित असुरक्षा की भावना को मुद्दा बनाकर हिंदू मतों का ध्रुवीकरण किया जा रहा है। रिपोर्ट में लिखा है कि छोटी से छोटी घटना को तूल देने के कारण इन घटनाओं के बड़े सांप्रदायिक रूप लिए जाने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।

डीआईजी की रिपोर्ट में घट गया हिंदुओं का प्रतिशत डीआईजी ने डीजीपी मुख्यालय को भेजी रिपोर्ट में लिखा है कि बड़ी संख्या में व्यापारी व किसान अपनी उन्नति के लिए कस्बा छोड़कर चले गए हैं। हालांकि उनकी रिपोर्ट में कैराना में जनसंख्या को लेकर दो जगह दिए गए आंकड़ों में हिंदुओं का प्रतिशत 18.34 प्रतिशत से घटकर 15 रह गया है। रिपोर्ट में डीआईजी ने एक जगह वर्ष 2011 की जनगणना का हवाला देते हुए लिखा है कि कैराना की जनसंख्या 89300 है जिसमें 18.34 प्रतिशत हिंदू और 80.74 प्रतिशत मुस्लिम हैं। इनमें से 47047 पुरुष और 41953 महिलाएं हैं। वहीं एक जगह उन्होंने लिखा है कि कैराना की जनसंख्या करीब 95000 है इनमें से 85 प्रतिशत मुस्लिम और 15 प्रतिशत हिंदू हैं।

### आरोपियों का नाम निकालने का दबाव

डीआईजी ने रिपोर्ट में एक महिला के अपहरण व हत्या के मामले में कश्यप जाति के दो लोगों का नाम निकालने के लिए दबाव बनाने का हुकुम सिंह पर आरोप लगाया है लेकिन उन्होंने इस आरोप को रिपोर्ट में थोड़ा घुमाकर लगाया है। ये मामला उन घटनाओं में से एक है जिनके हवाले से ये आरोप लगाया गया है कि डर व दहशत के चलते लोग कैराना से पलायन कर रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक अकबरपुर सुन्हैटी में गुड्डी नामक महिला की अपहरण के बाद हत्या हो गई थी। इस मामले में दो मुस्लिम व दो हिंदू कश्यप के नाम आए। जिसमें मुस्लिमों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। लेकिन हिंदू कश्यप अभियुक्तों के नाम निकालने के लिए दबाव बनाया जा रहा है। डीआईजी ने रिपोर्ट में लिखा है कि सांसद हुकुम सिंह का कैराना के मायापुर में करीब 1000 बीघे का फार्म हाउस है जिसमें अधिकतर कश्यप जाति के लोग मजदूरी करते हैं।

### मुकदमों ने भी हुकुम को घेरा

डीआईजी ने उन मामलों में भी हुकुम सिंह को घेरा है जिनको लेकर पुलिस पर कार्रवाई न करने और पीड़ित परिवारों द्वारा पलायन करने की बात कही जा रही है। 26 मार्च 2013 को मंदबुद्धि बच्चे की गलती से होलिका में आग गई थी। इसके विरोध में एक धार्मिक स्थल पर आगजनी और तोड़फोड़ हुई थी। इस मामले में हिंदू गुर्जरों के खिलाफ हुए मुकदमे को लेकर हुकुम सिंह का तत्कालीन एसपी अब्दुल हमीद से विवाद हो गया था।

शामली के आजाद चौक के पास एक युवती को अगवा कर रेप करने के मामले को लेकर सुरेश राणा और हुकुम सिंह ने सांप्रदायिक रूप देने का प्रयास किया। अभियुक्तों की गिरफ्तारी को लेकर थाना घेरकर प्रदर्शन किया गया। धारा 144 लगे होने के बाद भी इन लोगों ने प्रदर्शन किया। इस मामले में सांसद हुकुम सिंह व सुरेश राणा समेत 250 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। डीआईजी का दावा है कि इस मामले में प्रकाश में आए सात में से छह अभियुक्त गिरफ्तार किए जा चुके हैं। डीआईजी की रिपोर्ट के मुताबिक इस मामले को लेकर हुकुम सिंह ने पुरुष जज के धर्म और महिला के 164 के बयान उनकी मौजूदगी में कराए जाने को लेकर भी शिकायत की।

वर्ष 2014 में कैराना में लोहा व्यापारी शिव कुमार व राजेन्द्र कुमार की हत्या के मामले में मुकीम काला समेत नौ लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। शिव कुमार व राजेंद्र कुमार का परिवार अब मुजफ्फरनगर में रह रहा है। लेकिन उनकी दुकान व मकान कैराना में मौजूद है। वहीं एक अन्य व्यापारी विनोद की हत्या के मामले में डीआईजी की रिपोर्ट कहती है कि इसे फुरकान गैंग ने अंजाम दिया। चार लोगों के नाम सामने आए उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। विनोद की कस्बा कैराना में दो दुकान हैं जिसे उनका भाई वरुण चलाता है। उसे दो गनर पुलिस की तरफ से मिले हैं।

### मीडिया की जहरीली भूमिका

कैराना के मामले में मीडिया की भूमिका बहुत जहरीली हो गई है। तीन दिन पहले हरियाणा से बीजेपी कोटे में राज्यसभा सांसद बने सुभाष चंद्रा के जी न्यूज चैनल ने कैराना की बनावटी रिपोर्ट दिखाना शुरू की...मानों वहां हिंदूओं का कत्लेआम शुरू हो गया है। एनडीटीवी को छोड़कर कमोबेश इसी तर्ज पर बाकी चैनल भी रहे। जी न्यूज वही चैनल है जिसने जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी की घटना को तोड़मरोड़ कर पेश किया और पूरे कैंपस के माहौल को खराब करने की कोशिश की। जी न्यूज वही चैनल है जो स्वयंभू राष्ट्रभक्त बना हुआ है। दरअसल, वो बीजेपी को नमक का कर्ज लौटाने के लिए टाइम्स नाउ के अर्णव गोस्वामी से भी आगे निकलना चाहता है। आने वाले दिनों में ये चैनल और भी माहौल खराब करने वाला है। पूंजीपतियों के कुछ राष्ट्रभक्त अखबारों ने भी यही ठेका ले रखा है।

# एक थे जनकवि घाघ !

बिहार और उत्तर प्रदेश के सर्वाधिक लोकप्रिय जनकवियों में कवि घाघ का नाम सर्वोपरि है। सम्राट अकबर के समकालीन घाघ एक अनुभवी किसान और व्यावहारिक कृषि वैज्ञानिक थे। सदियों पहले जब टीवी या रेडियो नहीं हुआ करते थे और न सरकारी मौसम विभाग, तब किसान-कवि घाघ की कहावतें खेतिहर समाज का पथप्रदर्शन करती थी। खेती को उत्तम पेशा मानने वाले घाघ की यह कहावत देखिए - %उत्तम खेती मध्यम बान, नीच चाकरी, भीख निदान। घाघ के गहन कृषि-ज्ञान का परिचय उनकी कहावतों से मिलता है। माना जाता है कि खेती और मौसम के बारे में कृषि वैज्ञानिकों की भविष्यवाणियां झूठी साबित हो सकती है, घाघ की कहावतें नहीं। कन्नौज के पास चौधरीसराय नामक ग्राम के रहने वाले घाघ के ज्ञान से प्रसन्न होकर सम्राट अकबर ने उन्हें सरायघाघ बसाने की आज्ञा दी थी। यह जगह कन्नौज से एक मील दक्षिण स्थित है। घाघ की लिखी कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं है, लेकिन उनकी वाणी कहावतों के रूप में लोक में बिखरी हुई है। उनकी कहावतों को अनेक लोगों ने संग्रहित किया है। इनमें हिंदुस्तानी एकेडेमी द्वारा 1931 में प्रकाशित रामनरेश त्रिपाठी का घाघ और भड्डुरी अत्यंत महत्वपूर्ण संकलन है। घाघ की कुछ कहावतों की बानगी देखिए !

0 दिन में गरमी रात में ओस
कहे घाघ बरखा सौ कोस !
0 खेती करै बनिज को धावै, ऐसा डूबै थाह न पावै।
0 खाद पड़े तो खेत, नहीं तो कूड़ा रेत।
0 उत्तम खेती जो हर गहा, मध्यम खेती जो संग रहा।
0 जो हल जोतै खेती वाकी, और नहीं तो जाकी ताकी।
0 गोबर राखी पाती सड़ै, फिर खेती में दाना पड़ै।
0 सन के डंठल खेत छिटावै, तिनते लाभ चौगुनो पावै।
0 गोबर, मैला, नीम की खली, या से खेती दुनी फली।
0 वही किसानों में है पूरा, जो छोड़ै हड्डी का चूरा।
0 छोड़ै खाद जोत गहराई, फिर खेती का मजा दिखाई।
0 सौ की जोत पचासै जोतै, ऊँच के बाँधै बारी
जो पचास का सौ न तुलै, देव घाघ को गारी।
0 सावन मास बहे पुरवइया
बछवा बेच लेहु धेनु गइया।
0 रोहिनी बरसै मृग तपै, कुछ कुछ अद्रा जाय
कहै घाघ सुन घाघिनी, स्वान भात नहीं खाय।
0 पुरुवा रोपे पूर किसान
आधा खखड़ी आधा धान।
0 पूस मास दसमी अंधियारी
बदली घोर होय अधिकारी।
0 सावन बदि दसमी के दिवसे
भरे मेघ चारो दिसि बरसे।
0 पूस उजेली सप्तमी, अष्टमी नौमी जाज
मेघ होय तो जान लो, अब सुभ होइहै काज।
0सावन सुक्ला सप्तमी, जो गरजै अधिरात
बरसै तो झुरा परै, नाहीं समौ सुकाल।
0 रोहिनी बरसै मृग तपै, कुछ कुछ अद्रा जाय
कहै घाघ सुने घाघिनी, स्वान भात नहीं खाय।
0 भादों की छठ चांदनी, जो अनुराधा होय
ऊबड़ खाबड़ बोय दे, अन्न घनेरा होय।
0 अंडा लै चीटी चढ़ै, चिड़िया नहावै धूर
कहै घाघ सुन भड्डुरी वर्षा हो भरपूर ।
0 दिन में बद्दर रात निबद्दर ,
बहे पूरवा झब्बर झब्बर
कहै घाघ अनहोनी होहिं
कुआं खोद के धोबी धोहिं ।
0 शुक्रवार की बादरी रहे शनिचर छाय
कहा घाघ सुन घाघिनी बिन बरसे ना जाय
0 काला बादल जी डरवाये
भूरा बादल पानी लावे
0 तीन सिंचाई तेरह गोड़
तब देखो गन्ने का पोर

- ध्रुव गुप्त